RESEARCH PAPER

RESEARCH HUB International Multidisciplinary Research Journal
e-ISSN: 2349-7637 | Vol.09 | Iss.02 | February 2022 | pp. 50-54
Double-Blind Peer Reviewed/Refereed Journal

The direction of social philosophy in the novels of Narendra Kohli
नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों में समाज दर्शन की दिशा

*Jitendra Singh

Research Scholar

Abstract

Narendra Kohli of the novel has given a new vision to social philosophy. His mind has been running from past to present and from present to past. Therefore, he has seen the characters of Ramayana from the Mahabharata standing in his midst. Due to the identity of the Indian, the components have been Ramayana and Mahabharata, so it is natural to have a relation of the cultured consciousness to the people through them. Therefore, in the emotion of the reader, Narendra Kohli has been able to expand his identity through these stories. Narendra Kohli has made him his ideal by giving special importance to society, economics, political and culture in the directions of social philosophy. His satirical style is seen in social novels.

Keywords: *Society, Philosophy, Ram Katha, Mahabharata, Social Consciousness*

Abstract in Hindi Language:

उपन्यास का नरेन्द्र कोहली ने समाज दर्शन को नवीन दृष्टि दी है। उनका मन अतीत से वर्तमान की ओर तथा वर्तमान से अतीत की ओर दौड़ता रहा है। अतः उन्हें महाभारत से रामयण के पात्र अपने बीच खड़े दिखायी दिये है। भारतीय की अस्मिता के कारण घटक रामायण और महाभारत रहे है तो संस्कारगत चेतना का संबंध इनके माध्यम से जन–जन तक होना सहज स्वाभाविक है। इसलिए पाठक के भावोद्दीपन में नरेन्द्र कोहली इन कथानकों के माध्यम से अपने तादात्म्य को विस्तार दे सके है। नरेन्द्र कोहली ने समाज दर्शन की दिशाओं में समाज, अर्थ, राजनीतिक और संस्कृति को विशेष महत्व देकर उन्हें अपना आदर्श बनाया है। उनकी व्यंग्य शैली सामाजिक उपन्यासों में देखने को मिलती है।

Keywords: *समाज, दर्शन, रामकथा, महाभारत, सामाजिक चेतना।*

Article Publication

Published Online: 20-Feb-2022

***Author's Correspondence**

Jitendra Singh

Research Scholar

jitendrasingh72009@gmail.com

10.53573/rhimrj.2022.v09i02.009

© 2022 The Authors. Published by RESEARCH HUB International Multidisciplinary Research Journal. This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

शोध विस्तारः–

साहित्य समाज का संवेदनशील सदस्य होने के कारण सामाजिक जीवन की यथार्थ स्थितियाँ उसे सामान्य व्यक्ति की तुलना में अधिक तीव्रता से प्रभावित करती है। साहित्यकार संवेदनशील, कल्पनाशील और दूरदर्शी, भविष्यदर्शी होने के कारण उनकी रचनाऐं मानव जाति के लिए एक निश्चित दिशा देने का प्रयास करती है। साहित्यकार केवल दिशा ही नहीं देता, बल्कि अपने समकालीन जीवन को सजग और सचेत भी करता है, अर्थात समकालीन जीवन के प्रति होने वाली प्रतिक्रिया ही साहित्य का प्रतिपाद्य होती है। रचनाकार समाज के साथ अविरल भाव से जुड़ा होता है। वह एक सामाजिक चेतना, व्यक्तिगत दायित्व, कला सृजन और अपने युग के इतिहासबोध के प्रति प्रतिबद्ध होता है। उसकी रचना भूत, भविष्य और वर्तमान के समन्वय से मानव नियति को एक निश्चित दिशा और आकार देने का प्रयास करती है।

साहित्यकार सामाजिक चेतना से अनुप्राणित रहता है। उसका दृष्टिकोण चाहे आदर्शवादी हो, चाहे यथार्थवादी हो, उसके साहित्य में जहां एक ओर सांस्कृतिक यथार्थ को व्यंजित करने की तत्परता रहती है वहीं पर समाज के वांछित विकास के लिए बेहतर विकल्प देने की अभिलाषा भी रहती है।[1] नरेन्द्र कोहली ने रामकथा और महाभारत कथा के माध्यम से समाज के पतन का मूल बिन्दु पारिवारिक विघटन में है यह बताना चाहा है। इस प्रयास में वे समकालीन परिस्थितियाँ निर्माण करने में पूर्ण सफल रहे है। जो पीढियाँ संयुक्त परिवार में पाये जाने वाले संस्कारों से वंचित रह जाती है उनमें विद्रोह और क्षोभ तो होता ही है और यही कारण है कि बड़े–छोटों का आदर और प्रेम नहीं संभाल सकते। संयुक्त परिवार में रहने वाले राम युवराज्याभिषेक से पूर्व जानते थे कि मन से टूटे हुए इस परिवार में कुछ न कुछ उपद्रव अवश्य होगा।

''मुझे लगता है सीते!'' राम मंद स्वर में बोले, ''इस कुटुंब में अनेक संदेह, शंकाएँ, आशंकाएँ, विरोध, द्वन्द्व, ईर्ष्याएँ, स्वार्थ, द्वेष और जाने क्या–क्या विषैले जीव जो उठे हैं। वे परस्पर लड़ेंगे। इस राजप्रासाद में कुछ विषैला हो जायेगा। इधर माँ के मन में आशंकाएँ है, उधर पिताजी के मन में। और मैं कैसे दूँ सीते! कि मेरे मन में कोई आशंका नहीं है। जन्तुओं के समान मौन सो रहे है। आज मेरे युवराज्याभिषेक की चर्चा से वे सारे जीव जन्तु ....''[2]

गृहकलह युवा पीढ़ी को घर से दूर ले जाता है जहाँ शान्ति और आपसी प्रेम नहीं वहीं विरक्ति की भावना जन्म लेती है। आज की युवा पीढ़ी में यह स्पष्ट नजर आता है। ऐसी ही परिस्थितियों में युवा राम सोचते है ....

कहाँ थे राम और कहाँ आ गये ? यदि कहीं विश्वामित्र उन्हें बुलाने अयोध्या न आते तो राम अपने राजभवन में सुख का जीवन व्यतीत कर रहे होते। सम्राट की विभिन्न रानियों की दासियों का कलह देखकर क्षुब्ध हो रहे होते। विभिन्न माताओं का वैर–विरोध देखते। मंत्रियों तथा ब्राह्मणों के दलों का जूझना देखते .... ।[3]

जिस समय नरेन्द्र कोहली जी ने उपन्यासों को लिखने का कार्य प्रारम्भ किया था। उस समय समाज की सामाजिक स्थिति बहुत ही पंगु थी, यह सभी स्थितियों को कोहली जी ने अपनी आँखों से देखा था। इसके बाद कोहली जी ने इन सामाजिक परिस्थितियों को अपने उपन्यासों में चित्रित किया। कोहली जी ने सामाजिक परिस्थितियों को विभिन्न धार्मिक, सामाजिक, उपन्यासों के द्वारा ही उठाया है। वह एक सफल लेखक है पर तत्कालीन परिस्थितियों ने कोहली जी को प्रभावित किया और उसके प्रभाव के कारण इनकी लेखनी द्वारा ही रामकथा और महाभारत के जैसे उपन्यासों में भी वर्तमान सामाजिक परिवेश स्पष्ट तौर पर दिखाई देता है।

अर्थ मनुष्य जीवन का मूलाधार है। मनुष्य को जीवनयापन के लिए अर्थ का साधन के रूप में प्रयोग करना पड़ता है। मनुष्य की आर्थिक स्थितियाँ ही समाज में विभिन्न श्रेणियों और अनेक संघर्षों के स्वरूप को निर्धारित करता है। दास प्रथा से पूँजीवादी व्यवस्था तक निम्न वर्ग का शोषण आर्थिक कारणों से ही हुआ है। सामंती व्यवस्था में शोषण का रूप प्रत्यक्ष था।

स्वतन्त्र भारत को राजनीतिक पराधीनता से मुक्ति तो मिली लेकिन आर्थिक दृष्टि से यह देश कमजोर रह गया। सदियों तक गुलामी की जंजीरों में जकड़े रहने के कारण भारत को आर्थिक विकास का अवसर नहीं मिल पाया था। पराधीनता के कारण पीढ़ी दर पीढ़ी अज्ञानता और गरीबी के दलदल में फँसती चली गयी थी। स्वतंत्रता के बाद नये सिरे से भारत ने अपनी समृद्धि और आत्मोन्नति पर विचार करना आरम्भ किया। गरीबी निवारण के अथक प्रयासों के बावजूद आज तक देश में 40 जनसंख्या गरीबी की रेखा के नीचे का जीवन व्यतीत कर रही है।

समकालीन रचनाकार जब खुली आँखों से देखता है कि व्यवस्था की पूँजीवादी आर्थिक नीति अमीरों को फलने–फूलने में मदद कर रही है। काले धंधे करने वाले भ्रष्ट लोग दिन–दूनी रात चौगुनी सम्पत्ति बटोर कर रावण बनते जा रहे है। झोपड़ी वाले भूखों मर रहे है और महलों के पास ढेर सारा अनाज जूठे पत्तलों में फेंक दिया जाता है। अमीरी और गरीबी के बीच की खाई बढ़ती जा रही है तो वो आर्थिक विसंगतियों को रोकने के लिए शासन कुछ भी नहीं कर रहा है। शिक्षित लोग बेरोजगार होकर मारे–मारे फिर रहे है। गाँव, नगर, महानगरों में शोषक वर्ग कुण्डली मारकर बैठे हैं तब इस शोषण के विरूद्ध लेखक का छोटा–छोटा महाभारत समकालीन उपन्यासों में उजागर होता है। हजारों हजार छोटे–छोटे महाभारत उनकी विकसित होती हुई आर्थिक चेतना के साक्षी है। यही कारण है कि कोहली जी ने राम और कृष्णकालीन आर्थिक परिस्थितियों में तत्कालीन समाज के आर्थिक शोषण का चित्र अंकित किया है।

जब समाज में आर्थिक स्थिति खराब होती है तब अत्याचार बढ़ने लगते है, इसलिए कोई भी देश अपने आपको आर्थिक रूप से सम्पन्न रखना चाहता है। यदि राज्य की आर्थिक स्थिति अच्छी होगी, तो किसी भी विपत्ति का सामना आसानी से किया जा सकता है। इसी कारण सभी राज्य सर्वप्रथम अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने में लगे रहेत है। कभी–कभी तो राज्य की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के कारण राज्य के नागरिकों पर अतिरिक्त टेक्स बढ़ जाता है पर यह तो स्पष्ट है कि आर्थिक मजबूती के लिए सभी कष्टों को सहन कहना ही होगा तभी राज्य की आर्थिक स्थिति मजबूत होगी।[4]

आम आदमी से तात्पर्य इस देश की उस जनता से है जो आर्थिक दृष्टि से पिछड़ी है। विकास की गति का सीधा लाभ नही ंउठा पा रही है और बहुसंख्य है। इस वर्ग में मध्यवर्ग और निम्न वर्ग पूरा आ जाता है। इसका जन्म अभाव में होता है और अभाव में ही खत्म भी हो जाता है। क्यों कि उच्च वर्ग और पूँजीपतियों की तरफ बढ़ती हुई ललचायी दृष्टि इनकी आवश्यकताओं को सीमा से अधिक बढ़ा देती है, ये यन्त्रवत् सुखोपयोग करने के लिए भागते है और निरन्तर अभाव तथा जलालत की जिन्दगी जीते है। मध्य वर्ग तो अधिकांश स्तरों पर संयम से काम लेते हुए अपने को संभाल लेता है, किन्तु निम्न वर्ग जो मजदूर, भूमिहीन और छोटे–छोटे दुकान व धंधों के सहारे जीता है। वह अक्सर फुटपाथ पर सोने, भीख मांगने के लिए

विवश होता रहता है। दिनभर कड़ी मेहनत करने के बाद भी वह इतना भी नहीं कमा पाता कि सुखपूर्वक रह और खा सके। उसे निरन्तर अगले दिन की चिन्ता लगी रहती है। ऐसी स्थिति में उसकी जिन्दगी बोझ बन जाती है। यही आज के आम आदमी की स्थिति है। इसी घुटन भरी मानसिकता का निम्न चित्रण में है।

धर्मभृत्य ने लक्ष्मण और राम को खान में काम करने वाले लोगों के शोषण की व्यथा सुनायी......... ''भाँडकर्णि ने इन श्रमिकों के जीवन को प्रत्यक्ष तथा अत्यन्त निकट से देखा। श्रमिकों में ऋक्ष, वानर, निषाद, शबर तथा अनेक जातियों के लोग थे। पुरूष, स्त्रियाँ, बालक, वृद्ध यहाँ तक कि रोगी भी अपनी आजीविका के लिए खानों काम करने को बाध्य थे। वे दासों के समान काम करते थे और बंदियों के समान बस्ती में रखे जाते थे। भंडकर्णि उनकी अवस्था देखकर द्रवित हो उठे। उन्होंने अपना आश्रम त्याग श्रमिकों की बस्ती में रहना आरम्भ किया। उन्हें यह देखकर अत्यन्त पीड़ा हुई कि इस अत्याचार का विरोध तो श्रमिकों के मन में नहीं था। वे लोग अत्याचार के प्रति सजग भी नहीं थे। भांडकर्णि ने उन्हें समझाया कि उनके साथ अत्याचार हो रहा है। उनसे उनकी क्षमता से अधिक काम लिया जा रहा है। काम करने के स्थान पर सुरक्षा का प्रबन्ध नहीं है। इसी कारण खान–दुर्घटनाओं की संख्या बहुत अधिक है। कम वय के बालकों, दुर्बल स्त्रियों, क्षीण वृद्धों तथा रोगियों से भी ऐसा कठिन काम लिया जाता है कि उनके स्वास्थ्य और जीवन दोनों के लिए घातक है। उन्होंने खान कर्मचारियों को यह भी बताया कि न केवल अधिक सुविधाजनक कार्यपद्धतियों, अधिक परिश्रम, वरन् उनके द्वारा उत्पादित खनिज पदार्थ पर भी उनका अधिकार है।[5]

राजनीतिक शब्द का प्रयोग विविध अर्थों में किया जाता है। राजनीति शब्द बहुअर्थी है। नीति शब्द नय धातु से बना है जिसका अर्थ 'ले जाना' होता है। नीति शब्द का अर्थ है वह नियम जो आगे ले जाता है। मनुष्यों के पारस्परिक व्यवहार व नियम जो राज्य को उन्नति की ओर ले जाये। राजनीति का संबंध किसी न किसी समाज अथवा समाजों से अवश्य होता है। इसलिए राजनीति राज्य को, समाज को अथवा समाजों की उन्नति के मार्ग पर ले जाने वाली विधा का नाम है।

अनेक विद्वानों ने राजनीति को परिभाषित करने का प्रयास किया है। डॉ. जितेन्द्र वत्स के अनुसार राजनीति की संक्षिप्त परिभाषा यह है कि ''व्यक्ति व्यक्ति के समूह के द्वारा संघर्ष या सहयोग के माध्यम से सत्ता इस्तेमाल करने के लिए प्रयत्नशील गत्यात्मक गतिविधि राजनीति है।

उपर्युक्त परिभाषा के आधार पर स्पष्ट हो जाता है कि राजनीति शक्ति और प्रभाव की वह गत्यात्मक गतिविधि है, जिसके द्वारा या व्यक्तियों का समूह, सहयोग अथवा संघर्ष के माध्यम से अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए राजनीतिक संचरनाओं, प्रक्रियाओं एवं क्रियाविधियों की औचित्यपूर्ण सत्ता के प्रयोग का प्रयास करते है।

लेखक मानव जीवन से जुड़ा संवेदनशील प्राणी होता है। मानव जीवन में पाये जाने वाले अन्तर्विरोधों और विसंगतियों को वह अपनी रचनाओं का विषय बनाता है। साहित्यकार अपने विषय की अभावात्मक स्थितियों से आन्दोलित होकर बेहतर समाज रचना के उद्देश्य से साहित्य सृजन में प्रवृत होता है। यही कारण है कि प्रत्येक लेखक अपने काल के प्रगतिशील तत्वों का समर्थन और प्रतिगामी शक्तियों का विरोध करता है।

राजनैतिक वातावरण बहुत दूर तक सहित्य के स्वरूप को निर्धारित करता है और साहित्य राजनीति के स्वरूप को निश्चित करने में सहायक होता है। आजादी से पूर्व का साहित्य स्वतन्त्रता प्राप्ति के उद्देश्य को समर्पित था। किन्तु आजादी के पश्चात रचनाकारों का लक्ष्य बदल गया। आन्तरिक स्थितियों के सूक्ष्म निरीक्षण और आलोचना का क्रम आरम्भ हो गया। सन् 1947 से लेकर तोआज तक की विधाओं में यहीं बौद्धिक चेतना सक्रिय रही है। कथ्य के इस वैशिष्ट्य ने साहित्य के अभिव्यंजक शिल्प को बहुत दूर तक प्रभावित किया।[6]

लोागों का विश्वास था कि स्वतन्त्रता प्राप्त हो जाने के उपरान्त देश की परिस्थिति में अनुकूल परिवर्तन होगा। सभी नागरिकों को विकास के समान अवसर मिलेंगे। सभी की भावनाओं का आदर होगा। सभी की जीवन स्तर ऊपर उठेगा और स्वतन्त्र वातावरण में सभी नागरिक सुरक्षित और सम्मानजनक जीवन जी सकेंगे। किन्तु ऐसा नहीं हुआ।

देश के सभी स्तरों पर उभरी भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था को कोहली जी ने समकालीन बाना पहनाकर रामकथा और कृष्णकथा के माध्यम से प्रस्तुत किया है। पदलोलुपता, स्वार्थांधता, भ्रष्टाचार, अनुशासनहीनता, अनीति, अराजकता, गुंडाराज, चरित्रहीनता, अवसरवादिता, राष्ट्रीय संपत्ति का दुरूपयोग, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, युद्ध जैसी अनेक कृतियों में समकालीन बोध साथ–साथ चलता है।

आज समाज में अधिकांश बुराइयाँ जो देखने को मिल रही है, इनमें से कुछ को छोड़कर शेष सभी कहीं न कहीं, किसी न किसी प्रकार से राजनीति से अवश्य प्रेरित होगी, क्योंकि लगभग सभी घटनाएँ राजनीतिक संरक्षण के द्वारा ही जन्म लेती हैं और ये छोटी–छोटी बुराइयाँ धीरे–धीरे विकराल रूप धारण कर लेती है, रजानीति के कुछ अच्छे भी परिणाम आते है। पर क्या किया जाये एक बुराई सैकड़ों अच्छाइयों को दबा देती है। राजनीतिक परिस्थिति किसी न किसी प्रकार से सभी को प्रभावित करती है। इसके अभाव में बिना व्यक्ति जीवित भी नहीं रह सकता है। राजनीति आज के मानव का महत्वपूर्ण पहलू बन चुकी है।

हजारों वर्षों के अन्तराल के उपरान्त भी मनुष्य की प्रवृतियों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ और साथ परिस्थितियाँ समानान्तर रूप से चल रही है। किसी भी युग के राजाओं, राजनेताओं, राजनीतिज्ञों की दिशा और दशा प्रायः एक सी होती है। उनके हथकंड और हरकते प्रायः समान होती है। सत्ता हाथ लगते ही स्वार्थ का दानव सुरसा की तरह मुँह फाड़ते ही जाता है। फिर सत्ता से चिपके रहने की हर संभव कोशिश तब तक चलती रहती है जब तक कोई धकियाकर हटा न दे। सिंहासन हो या कुर्सी मनुष्य मृत्यु की अंतिम सांस तक छोड़ना नहीं चाहता। पूरा महाभारत 'किस्सा कुर्सी का' ही है।[7]

जब कोहली जी ने उपन्यासों के लेखनी चलाई थी उस समय सांस्कृतिक स्थिति कुछ लचर थी पर कुछ समय पूर्व ही देश को आजादी प्राप्त हुई थी तो उस समय देश की स्थिति के अतिरिक्त सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक स्थिति लचर थी, पर इसकी ओर किसी का ध्यान भी नहीं था फिर धीरे–धीरे भारतवर्ष के लोगों में सांस्कृतिक विकास प्रारम्भ हो गया और लोगों ने शिक्षा, धर्म एवं अन्य सांस्कृतिक स्थितियोंकी ओर ध्यान दिया और धीरे–धीरे लोग शिक्षित होते रहे और उनके अन्दर सांस्कृतिक विकास होता रहा। अब तो सांस्कृतिक विकास की धारा ही प्रवाहित हो रही है और तो भारतवर्ष की सांस्कृतिक स्थिति इतनी विकराल है ? कि दूसरे देश भी हमारी संस्कृति को ग्रहण करने में लगे हुए है। आज बहुत से विदेशियों में हमारी संस्कृति का परचम फहरा रहा है। हमारे देश की संस्कृति एक विकराल संस्कृति है। इसकी कोई दूसरे देश से समानता नहीं की जा सकती है। भारत वर्ष की सांस्कतिक स्थिति बहुत मजबूत स्थिति में है। इसकी कोई समानता नहीं है।

भारतवर्ष में तो प्राचीन समय से सांस्कृतिक परम्परा का निर्वहन होता रहा है जिसमें धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की ओर भी बल दिया गया है। समाज दर्शन के अनुसार इसमें वैदिक सांस्कृतिक परम्पराओं का पालन किया गया है इसी के साथ भारतीय संस्कृति में वर्ण व्यवस्था का भी अंकन किया जिसमें ब्राह्मणों, क्षत्रिय तथा वैश्व के अलग–अलग कार्यों का वर्णन किया गया है। कोहली जी के उपन्यासों में इनका वर्णन स्पष्ट रूप से देखने को मिल जाता है। इनके पौराणिक उपन्यास में रामकथा तथा महाभारत पर आधारित तथा सामाजिक उपन्यासों में सांस्कृतिक परम्परा का पालन किया गया है।[8]

आज के संदर्भ में लोगों के विचार परिवर्तित होते चले जा रहे है और लोग अब अपनी–अपनी ढपली और अपना–अपना राग अपनाते जा रहे है पर कुछ भी यह एक प्रासंगिक ही है क्योंकि समाज दर्शन इन सभी बातों की ओर अपना ध्यान नहीं देता है।

समाज दर्शन के अनुसार संस्कृति का एक और आधार स्तम्भ विवाह प्रथा है। शास्त्रों में विवाह के आठ प्रकार कहे गये है किन्तु विवाह की 'कन्यादान' वाली पद्धति ही व्यापक और आदरयोग्य रही है। यहाँ साहित्य ने समग्रतः इस प्रकार की विवाह–प्रथा का डट कर विरोध किया है। लेकिन विवाह–प्रथा के समूल उन्मूलन के स्वर भी साहित्य में प्रबल है। संबंधों में स्वतन्त्रता का मत, विवाह–प्रथा से टकराता है। अतएव प्रेम–विवाह की स्थिरता को भी मानते रहना दूभर हो रहा है। विवाह के लिए यौन पवित्रता और शाश्वत संबंध (जन्म–जन्म का नाता) ये दो पुष्ट आधार माने जाते थे किन्तु आधुनिकता का तीखा संघर्ष संबंध में स्वरूप के संदर्भ में दिखाई पड़ता है। यशपाल, अज्ञेय, भारती तथा अस्तित्ववाद से प्रभावित कथा–सहित्य में यौनमुक्तता की चेतना बहुत सशक्त है। इस विचार के विश्वासी, संतान की समस्या का समाधान प्रतिष्ठानों में खोजते है, परिवारों में नहीं, क्योंकि परिवार में यौनमुक्तता में बाधक है।[9]

निष्कर्षः–

निष्कर्ष रूप से तो हम कह सकते है कि समाज दर्शन में एक मार्ग दर्शन कराने की ओर अग्रसर है पर यह तो ज्ञात होना ही चाहिए कि मनुष्य को किस स्थान पर समाज दर्शन की आवश्यकता पड़ती है और किन परिस्थितियों में इनका पालन किया जाय समाज दर्शन के द्वारा ही सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक दिशा तय करने के लिए समाज दर्शन प्रमुख रूप से दिखाई देता है।

संदर्भः–

भल्ला सिंह– भारत का समाज शास्त्र, पृ. 112

नरेन्द्र कोहली–अवसर, पृ. 218

नरेन्द्र कोहली–अवसर, पृ. 77

नरेन्द्र कोहली–अवसर, पृ. 103

नरेन्द्र कोहली के उपन्यास– सामाजिक सरोकार, पृ. 178

नरेन्द्र कोहली–अवसर, पृ. 401

भल्ला सिंह–साहित्य और समाज, पृ. 198

नरेन्द्र कोहली–बंधन, पृ. 121

एम.एन. श्रीवास्तव– समकालीन भारतीय समाज और संस्कृति, पृ. 62